कालिदास- प्रस्तुत नाटक का प्रमुख पात्र है।नाटक का कथानक उसी के इर्द-गिर्द घूमता है। राजपुरुष के बाण से आहत मृगशावक के प्राण वह बचाता है तब कालिदास के अत्यंत कोमल भावुक तथा सहृदय प्रकृति का पता चलता है। यही कारण है; जो उन्हे भिन्न व्यक्तित्व प्रदान करता है। उनकी कविता में यही सारी बातें या गुण चित्रित होते हैं। कालिदास का व्यक्तित्व जितना भावुक और संवेदनशील है उतना ही उनके ही व्यक्तित्व में स्थितियों के प्रति गंभीरता का लक्षण भी हैं। इसीलिए कालिदास उज्जयिनी के जाने के प्रति उत्साहित नहीं है। वह सहज स्वाभाविक जीवन न जीकर प्रतिक्रियाओं में जी रहा हैं। इसीलिए वह प्रतिक्रियावादी पुरुष है।

मल्लिका- कालिदास की प्रेमिका होने के कारण मल्लिका को अंबिका के गुस्से और लोकापवाद का शिकार होने पड़ता है। इसी के साथ वह मातुल और विलोम केआर व्यंग्य बाणों को झेलती हैं। कालिदास से जुड़े अपवादहो या राजकन्या से विवाह वह यह सारी बातें धैर्यतापूर्वक स्वीकार करती है। यही उसका समर्पण भाव है। भावना महत्वपूर्ण है और यही उसका मनुष्य का मनुष्य के प्रति प्रतिष्ठित करनेवाला गुण है। कालिदास की उन्नति ही उसके जीवन का एकमात्र ध्येय है इसीलिए वह कालिदास को उज्जयिनी जाने के लिए प्रेरित करती है। मल्लिका में आत्माभिमान है- इसीलिए वह प्रियंगुमंजरी के सभी प्रलोभन को नकारती हैं।

विलोम- विलोम भी मल्लिका से प्रेम करता है। विलोम का चरित्र कालिदास के चरित्र से विपरीत है। जहाँ कालिदास भावुक और संवेदशील है वही विलोम का दृष्टिकोण व्यावहारिक है। जो बात है उसे स्पष्ट रूप से कहने का साहस विलोम में है इसी के चलते नाटक में द्वंद्व और संघर्ष दिखाई देता है। नाटक के तीसरे अंक में यह संकेत मिलता है कि अंबिका कि मृत्यु के उपरांत उसी ने मल्लिका को आश्रय दिया है।

अंबिका -गाँव की वृदधा औरमल्लिका की माँ है। अंबिका भावनाओं में विश्वास नहीं रखती। उसके लिए लोकाचार, भौतिक आवश्यकताएँ और सांसारिक सुख महत्वपूर्ण हैं। इसीलिए वह मल्लिका का विवाह करना चाहती है। अंबिकाआत्माभिमानी है। वह भी मल्लिका का घर बसा

देखना चाहती है किन्तु अपमान का मूल्य देकर नहीं। अंबिका को मानव स्वभाव का ज्ञान है इसीलिए वह कालिदास के आत्मसीमित व्यक्तित्व को भली-भाँति पहचानती है।

प्रियंगुमंजरी-प्रियंगुमंजरी सम्राट की पुत्री है। साथ ही उसका कालिदास से विवाह हुआ है। मल्लिका उसे 'असाधारण' कहती है लेकिन उसके आचरण से वह साधारण ही प्रतीत होती है। उसके मन में जिज्ञासा उत्पन्न हुई है जिसके चलते उसे शांत करने के लिए वह कश्मीर जाते हुए गाँव जाती है और मल्लिका से मिलती है।राजकन्या होने का दर्प उसके प्रत्येक हावभाव से -झलकता है, अर्थात वह मल्लिका के सामने प्रस्ताव रख देती है। प्रियंगुमंजरी का चरित्र मल्लिका के चरित्र के सम्मुख निस्तेज प्रतीत होता है। क्योंकि मल्लिका में जो समर्पण भाव है वह अपने आप में श्रेष्ठ है।

मातुल- मातुल कालिदास के अभिभावक है। मातुल की उपस्थिती एक अवसरवादी, चापलूस और अतिव्यावहारिक चरित्र के रूप में दिखाई देती है, उदाहरणार्थ -उज्जयिनीसे जब कालिदास के लिए प्रस्ताव आता है और वह उस प्रस्ताव को नाकारता है तब मातुल को लगता है की कालिदास को अपनी उस प्रतिभा का उपयोग अधिकार और वैभव के लिए करना चाहिए। चापलूसी का उदाहरण- जब वह प्रियंगुमंजरी के साथ चिकनी-चुपड़ी बातें करता हैं।मातुल कालिदास को प्रेरित करता है और खुद भी उज्जयिनी चला जाता है। लेकिन संगमरमर पर फिसल कर अपनी टाँग तुड़ा बैठता है। इस दो प्रकार आचरणों से मातुल का स्वभाव प्रकट होता है। सबसे पहले आचरण उसकी महत्वकांक्षाओं से प्रेरित है तो दूसरा आचरण कृत्रिम जीवन से मोहभंग का परिणाम है।

दन्तुल-दंतुल एक राजपुरुष है। उसके व्यक्तित्व में सत्ता और अहंकारहै। प्रजा का सुख-दु:ख उनकी भावनाएँ उसकी दृष्टि में महत्वहीन है। वन्य जीवन राजपुरुष की दृष्टि में केवल शिकार है या फिर उनकी संपत्ति। सत्ता का उद्धट रूप राजपुरुष का पात्र है।

निक्षेप-एक ग्रामीण युवक है। वह मितभाषी और मृदुभाषी है। कालिदास की प्रतिभा और सामर्थ्य से परिचित होने के कारण वह मल्लिका से कालिदास को राजकीय सम्मान स्वीकार करने के लिए राज़ी करने का आग्रह करता है। उसे पता है की केवल योग्यता ही नहीं बल्कि उसे प्रमाणित करने के लिए अवसर भी महत्वपूर्ण है। अंत में उसे मल्लिका का त्याग और तपस्या निरर्थक सा प्रतीत होता है।

रंगिणी-संगिनी - ये दो स्त्री पात्र नागरी रूप में आई हैं। जो कालिदास के परिवेश पर शोध करने हेतु आई हैं, लेकिन उनके पास शोध के लिए वह समग्र, व्यापक और सतह-भेदी की दृष्टि नहीं है। उनका मानना था की कालिदास जैसे असाधारण व्यक्ति का परिवेश भी असाधारण ही रहेगा। इसीलिए सब कुछ साधारण देखकर वे चली जाती हैं। ये दो पात्र आधुनिक शोध-प्रक्रिया का उफास करने लगती हैं।

अनुस्वार-अनुनासिक - ये दोनों राजधानी के राजकर्मचारी हैं। जो प्रियंगुमंजरी के आने से पहले मल्लिका के घर की व्यवस्था में परिवर्तन करने हेतु आए हैं। उन दोनों के तर्क, आपसी असहमति, धैर्य का अभाव और इच्छा शक्ति का अभाव। ये दो राजकर्मचारी हमारे तत्कालीन समाज के व्यवस्था के प्रतीक हैं, जो करना कुछ नहीं चाहते लेकिन बहुत कुछ करने का दंभ कराते हैं।